मिजबान

एक परबार में पति-पत्नी रहत थे। दोई बड़े प्रेम से अपनो जीबन बिता रये थे। एक बार का भओ – उनके घर मिजबान आये, मिजबान आए तो दोई बड़े खुस भये। बिनको सुआगत करो। कई, "भोत दिना बाद आप आये हें।" मिजबान हे जलपान करबाओ।

दिन डूबे बे जान लगे तो पति-पत्नी ने कई, "ऐंसे केंसे जे हो बिना रोटी खाये। हम नईं जान दें।" भोजन के लाने बिन्हें रोक लओ। मिजबान बड़े खास थे, जासे बिनके लाने एक से एक पकबान बने। उन्हें जित्ती भी खाबे की चीजें पसन्द थीं बिनमें सबसे जादा पसन्द थे पापड़! भोतई जादा!! अति से जादा!!! यदि खाबे में पापड़ मिल जायें तो बे बड़े खुस।

थारी परस दई तो मिजबान हाथ-मोह धोके खाबे बेठ गए। थारी में पापड़ नई देख के बाहे लगो के बाद में पापड़ परस हें। पर जब पति ने हाथ जोड़के कई, "चलो भईया जेबो शुरू करो" तो मिजबान को मन बेठ गओ। काय से पापड़ बने थे, पापड़ों की थारी बिन्हें चोंका में धरी दिख भी रई थी, पर बे सरम के मारे कछु बोले नईं। पति-पत्नी सुइ पापड़ परसबो भूल गये थे। पति भोजन परसन लगो ओर पत्नी ताती-ताती रोटी बनान लगी। मिजबान भोजन करन लगे पर ले देके बाको ध्यान पापड़ों पेई चलो जाय। सिंके पापड़ चूल्हे के पास धरे थे, बे ऊँचे-ऊँचे, फूले-फूले दिख रये थे।

मिजबान ने बड़े रुचके सब चीज़ें खाईं – भजिया, बरफी, लड्डू, खीर-पुड़ी। मगर बाको ध्यान ले देके पापड़ों पेइ जाये। बो सोचे यदि में पापड़ नईं खा पाओ तो काहे की मिजबानी? बो मनई-मन सोच रओ, फिकर कर रओ के भईया-भोजी हे पापड़ परसबे की अब ध्यान में आहे, तब ध्यान में आहे। बाने धीरे-धीरे खाओ पर जब समझ में आयी, उन्हें याद नईं आ रई तब बाने जुगत लगाबे की सोची, जासे पापड़ खाबे मिल जायें। बाने बोली, "एक बात तो बताबोई भूल गओ...!" पति-पत्नी ने कई, "कोन-सी बात?" मिजबान बोलो, "भोतई ज़रूरी बात! कल तो भईया भगबान नेई मोह बचाओ। यदि भगबान मेरी रक्षा नई करतो, तो में मर जातो। फिर आज कहाँ मोहे जे भोजन- ओजन करबे मिलते। में तो कल्लई खतम हो जातो। भओ का में गैल से जा रओ थो इत्ते में सर्रा के एक करिया नाग आ गयो, का बताऊँ भईया! इत्तो... लम्बो साँप थो झां... से लेके बे पापड़ धरे हें भां... तक लम्बो।" जो बाने हाथ से इसारो करो पापड़ की थारी तक, तो पति-पत्नी एक साथ बोले, "अरे अपन पापड़ परसबो तो भूलई गये।" मिज़बान ने कई, "अब रहन दो।" दोई बोले, "ऐंसे केंसे रहन दें जे तो खानेई पड़हें।" मिज़बान ने कई, "अच्छा तो अब पापड़ों की थरिया लेई आओ।"

(इस बुन्देलखण्डी लोककथा का संकलन रामभरोस शर्मा ने और सम्पादन प्रदीप चौबे ने किया है।)